DEPARTMENT OF HINDI

BIR TIKENDRAJIT UNIVERSITY, IMPHAL MANIPUR

SYLLABUS for

MA Hindi

With effect from 2020-2021

HIN 101 प्राचीन एवं मध्यकालीन

इकाई-1-गोरखनाथ:-समालोचना –नाथ समप्रदाय और गोरखनाथ की भाषा ,काल निर्धारण।

इकाई-2-कबीरदास:-समालोचना—निर्गुण परमपरा और कबीर, दार्शनिकता,रहसया, कबीर की क्रानतिकारीता,काव्य-भाषा। साखीःगुरू की अंग, साधु के अंग।

इकाई—3-सुरदास:-समालोचना-कृष्णकावय परम्परा मे सूर, अषटछाप और सूरदास, सूर अभिव्यक्ति-कौशल ।

पद-11,18,27,37,50।

इकाई-4:-घनानंद-समालोचना-रीतीकालीन स्वच्छन्द काव्य –धारा और घनानंद की प्रेमानुभूति ,विरहवर्णन, और कौशल।

इकाई-5:-विशेष समीक्षातमक अध्ययन तुलसी:-युग-चेतना और सास्कृतिक जागरण,भावना,भक्ती,राम काव्य परम्परा और तुलसी ।मीरा:-भक्ति का सवरूप, काव्य सौनदर्य । बिहारी:-श्रृंगार,नीती और भकति,बहुज्ञता.

HIN 102: हिंदी साहित्य का इतिहास (आरंम्भ से रीतिकाल तक)

इकाई 1—हिंदी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन काल

और नामकरण ।

इकाई 2- आदिकाल के विविध धाराएँ – सिद्ध ,नाथ जैन,रासोकाव्यय ,रचनाकार और रचनाएँ आदिकालीन गध साहित्य ।

इकाई 3—भक्तिकालीन का नामकरण , सांस्कृति स्थिती,राजनीतिक परिदृश्य ,भक्ति की परम्परा ,काव्य धाराएँ ,निर्गुण का स्वरुप दार्शनिक मान्यताएँ ,प्रमुख निर्गुण संत कवि रचनाएँ,सूफीमत का विकास,परम्परा,प्रमुख कवि और रचनाएँ ।

इकाई 4- सगुण भक्तिधारा का स्वरुप ,रामकाव्य परम्परा के प्रमुख कवि व रचनाएँ कृष्ण काव्य परम्परा क प्रमुख कवि व रचनाएँ ,रामकृष्णेतर काव्य ,भक्तयेतर काव्य ,भक्तिकालीन गध्द साहित्य।

इकाई 5 –रीतिकाल का नामकरण ,तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक –सांसकृतिक परिवेश, रीतिकालीन कावय का श्वरुप एवं कावयधाराएँ –रीतिबदध ,रीतिसिदध ,रीतिमुक्त ,प्रमुख रचनाएँ,गदध साहित्य ।

HIN 103- भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

इकाई -1 भाषा परिभाषा और अभिलक्षण ,भाषा ब्यवस्था और व्यवहार ,भाषा विज्ञान की परिभाषा, भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ , वर्नात्मक भाषा विज्ञान ,ऐतिहासिक भा-षा व्यतिरेकी भाषा विज्ञान ,अनुप्रयक्त भाषा विज्ञान एवं समाज भाषा विज्ञान ।

इकाई-2 हिंदी भाषिक स्वरुप – स्वन विज्ञान कका स्वरुप और शाखाएँ ,वाक् अवयव और उनके कार्य, स्वनिम कि अवधार्णा और वर्गीकरण ,खण्डीय और खण्डेतर स्वनिम ,स्वर और व्यंजन – परिभाषा, वर्गीकरण,अक्षर की संकल्पना।रुपिम की अवधारणा,रुपिम के प्रकार-मुक्त और आवद्ध,व्यकरणिक कोटियाँ वाक्य की अवधारणा,वाक्य के भेद,आन्तरिक संरचना और बाहय सरंचना ।

इकाई 3- अर्थ विज्ञान,अर्थ की अवधारणा,शब्द और अर्थ का सम्बन्ध अर्थ परिवर्तन-दिशाएँ और कारण,शैली विज्ञान –परिभाषा,स्वरुप,शैली विज्ञान और भाषा विज्ञान का स्मबन्ध,हिंदी भाषा के प्रयोग के विविध रुप –बोली,मानक भाषा,शास्त्रीय भाषा,काव्य भाषा ।

इकाई 4—हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –प्रचीन भारतीय आर्य भाषाएँ—वैदिक और लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ । मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ –पालि,प्राकृत—शौरसेनी,अर्धमागधी,मागधी,-अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ। अपभ्रंश अवहट्ठ और पुरानी हिंदी का सम्बन्ध,आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण,हिंदी का भौगोलिक विस्तार,हिंदी का विविध शैलियाँ-हिंदी,उर्दू,दक्खिनी एवं हिंदुस्तानी।

इकाई 5—हिंदी शब्द रचना-पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग,प्रत्यय,समास,हिंदी की रुप रचना—लिंग,वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ मे संज्ञा,सर्वनाम,विशेषण,क्रिया रुप।दे वनागरी लिपि—देवनागरी लिपि का उन्द्भव और विकास,विशेषताएँ,मानकीकरण।

HIN 104-भारतीय काव्य-चिन्तन

इकाई-1 काव्य-लक्षण,काव्य-हेतु,काव्य-प्रयोजन,काव्य-भेद,शब्द और अर्थ।

इकाई 2 संस्कृत काव्य-शास्त्र—सिद्धात और सम्प्रदाय ।रस सम्प्रदाय- रस का स्वरुप,रस निष्पादक तत्व,रस-भेद,भरत मुनि का रस –सूत्र और रस निष्पत्ति,साधारणीकरण ।

इकाई 3 ध्वनि सम्प्रदायः ध्वनि स्वरुप,ध्वनि-काव्य के प्रमुख भेद,मान्यताएँ ।

इकाई 4 अलंकार सम्प्रदायः मूल स्थापनाएँ,अलंकार की परिभाषा और वर्गीकरण। वक्रोक्ति सम्प्रदायःअवधारणा एवं भेद,मान्यताएँ।

इकाई 5 रीति सम्प्रदायःरीति की अवधारणा,मूल मान्यताएँ,रीति और शैली । औचित्य सिद्धातः स्वरुप,मान्यताएँ,औचित्य-भेद,परम्परा।

HIN- 105 हिंदी कथा साहित्य

इकाई 1 हिंदी कहानी 1.एक टोकरी भर मिट्टी (माधवराव सप्रे)

2.उसने कहा था (चन्द्रधर शर्म गुलारी)

3.जाह्वी (जैनेन्द्र)

4.चीफ की दावत(भीष्म साहनी)

5.पिता(ज्ञानरंजन)

इकाई 2 गोदान(प्रेमचन्द)–महाजनी सभ्यता और किसान जीवन,ग्रामीण तथा नगरीय जीवन,प्रमुख समस्याएँ,गॉधीवाद का प्रभाव,स्त्री की स्थिती,भाषा और शिल्प।

इकाई 3 अपने-अपने अजनवी(अज्ञेय)-जीवन,परिवेश और समस्याएँ,चरित्र सृष्टि,मनोवैज्ञानिकता के आयाम,अस्तित्व का प्रश्न,भाषा एवं विचारधारा ।

इकाई 4 झूला नट(मैत्रेयी पुष्पा)-आधुनिकता और उतराधुनिकता,वर्तमान समाज के अंतर्विरोधों के बीच टूटता-बिखरता व्यक्ति,चरित्रसंकल्पना,रचना वैशिष्टय।